हरिद्वार-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए ब्र.कु. मीना दीदी, पीरप्रेमनाथ आश्रम से आये माननीय गणेशानन्द जी महाराज, अवधूत मण्डल आश्रम से आये माननीय संतोषानन्द जी महाराज तथा अन्य।

राँची-झारखण्ड। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए देव शंकर,सहायक महानिदेशक,संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय,भारत सरकार, प्रो. डॉ. सुशील,दर्शनशास्त्र,राँची विश्व विद्यालय राँची, अभियंता अरविंद प्रसाद, प्रो. जे.एन. प्रसाद,भौतिक शास्त्र,राँची विश्व विद्यालय राँची तथा ब्र.कु. निर्मला।

केशवपुरी-उ.प्र.। त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में द्विदिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. संतोष दीदी,डायरेक्टर,सेंट पीटर्सबर्ग रशिया, ब्र.कु. जयन्ती, समाजसेविका विनीता जैन, छोटूराम डिग्री कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. नरेश मलिक, डॉ. पी.सी. अग्रवाल तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति।

उदयपुर-राज.। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में शिवरात्रि पर्व का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीटा। साथ हैं उमा शंकर त्रिपाठी,कुलपति,एम.पी.ए.यू.टी., डॉ. अर्चना बापना, एडवोकेट बंसल साहब तथा अन्य।

रुड़की-उत्तराखण्ड। महाशिवरात्रि पर ध्वजारोहण करते हुए मिलिट्री के धर्म गुरू कृष्ण कान्त तिवारी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विमला तथा ब्र.कु. सोनिया।

सौंख-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में केक काटते हुए ब्र.कु. दुर्गेशलता बहन, ब्र.कु. केशकली, ब्र.कु. सुनीता, चेयरमैन भरत सिंह, ब्र.कु. बृजमोहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

बहादुरगढ़-हरियाणा। महाशिवरात्रि पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मांडोठी गांव के दादा सीताराम मंदिर में आयोजित विशाल कार्यक्रम में उपस्थित हैं भूप सिंह,प्रधान दलाल,खाप 84, सतपाल जी,प्रधान,ग्राम पंचायत संघ, समाजसेवी अशोक गुप्ता तथा अन्य गणमान्य अतिथियों के साथ ब्र.कु. जगरूप, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. रेनू तथा ब्र.कु. अमृता।

झालावाड़-राज.। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वज फहराते हुए एम.डी.एम. भवानीसिंह पालावत, मानव अधिकार अध्यक्ष विजय पोरवाल, ब्र.कु. मीना तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

!!! अनुभव !!!

परमात्म प्यार और लगन ही सबकुछ...!!

कहते हैं 'जाको राखे साईयां...मार सके ना कोई'। मैंने कहा बाबा.. बस आपको जो करना हो करो, मैं चुप रहूंगा। परिवार वालों ने बहुत धमकाया, हाथ पैर बांधने की भी कोशिश की, और यहाँ तक भी नौबत आयी कि हाथ पैर काटने की भी तैयारी कर ली गई। मेरा अंदर से विश्वास और लगन की तार मेरे प्यारे परमात्मा से जुड़ी हुई थी, और मैं मन ही मन बातें करता था कि आप सर्वशक्तिवान हो और मैं आपकी छत्रछाया के नीचे। मुझे विश्वास था कि मेरा बाल भी बांका नहीं होगा। हुआ भी यही। बहुत कुछ हल्ला, शोरगुल हुआ, लेकिन इसके बाद मेरा रास्ता हमेशा-हमेशा के लिए साफ हो गया। बस, फिर मेरी खुशी के ठिकाने का क्या कहना....! - ब्र.कु. सचिन, ओ.आर.सी.,गुरूग्राम।

मेरी परवरिश एक धार्मिक परिवार में धर्म पुत्र के रूप में हुई। बचपन से व्रत करना, मंदिर जाना ये मुझे बहुत पसंद था। भगवान के प्रति मेरी बड़ी आस्था थी। मात्र 16 वर्ष की आयु में मैं अनायास ही ब्रह्माकुमारीज़ के गीता पाठशाला में पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर मुझे इस ओर बहुत खिंचाव और अपनापन महसूस हुआ। परंतु मैंने मन ही मन सोचा कि यदि यहाँ सचमुच परमात्मा हैं और उनमें शक्ति है तो वे मुझसे सारी बुरी आदतें और अशुद्ध भोजन और बाहर की फालतू चीज़ों का खान-पान सब अपने आप ही छुड़ा देंगे, मैं स्वयं नहीं छोडूंगा। सचमुच तब से लेकर आज तक मुझे ऐसी किसी भी चीज़ के सेवन की इच्छा कभी जागृत नहीं हुई और ये सब चीज़ें उसी घड़ी से मुझसे अपने आप ही छूट गईं।

टांग काट दो, तो भी मुरली सुनने जाऊंगा

ज्ञान में आने के दो वर्ष उपरांत मेरी ईश्वरीय लगन बहुत तीव्र हो गई। मैं नित्य प्रति परमात्म महावाक्य मुरली सुनने का आनंद उठाने लगा। मुझे इस ज्ञान में इतना रस आने लगा कि मैं इसके बिना रह ही नहीं सकता था। जब मेरे घर वालों को इस बात का पूर्ण रूप से ज्ञान हुआ तो उन्होंने सोचा कि कहीं ये इस ज्ञान में पूरी तरह से ना डूब जाये, फिर तो ये शादी भी नहीं करेगा, हमारे वंश की वृद्धि कैसे होगी! इस कारण उन्होंने मुझे रोक-टोक लगाना शुरू कर दिया, मुझे बंधनों में बांधने की कोशिश करने लगे। उन्होंने मुझसे कहा कि जैसे हम चल रहे हैं, ऐसे ही तुम भी चलोगो। गीता पाठशाला में जाना बंद करो। मैंने कहा कि शुद्ध भोजन करना, भगवान का ध्यान करना, सुबह जल्दी उठ स्नान आदि करना, ये तो सब अच्छी बाते हैं। लेकिन उन्होंने मेरी एक नहीं सुनी।

एक बार मैं रात को पाठशाला में मुरली सुन रहा था। तभी किसी ने आकर मुझे बुलाया 'घर चलो', मैं घर गया तो देखा कि घरवाले और गांव के मुखिया बैठे थे। मुझे आधी मुरली छोड़कर आना पड़ा, तो मैंने परमात्मा को कहा कि बाबा अब जो होगा, ज़िम्मेवार आप हो। मैंने संकल्प किया कि कोई कुछ भी कहे, मैं चुप रहूंगा। उन्होंने मुझसे पूछा कि मना करने के बाद भी वहाँ क्यों जाता है? मैं चुप था, इसलिए दूसरा भाई जो ज्ञान में है, उसने बताया कि ये कुछ नहीं बोलेगा। उन लोगों ने बोला, कैसे नहीं बोलेगा! लाओ, अभी इसे बांध देते हैं। मेरे अंदर संकल्प आया कि कहाँ सर्वशक्तिवान परमात्मा मेरे साथ, और कहाँ ये मुझे बांधने की बात कर रहे हैं! फिर बोले, इसकी दोनों टांग काट देते हैं, मुझे डराने लगे। मैंने सोचा कि अगर ये मेरी टांग काट भी देते हैं, तो भी बुद्धि की तार तो नहीं काट सकते। अगर बिना टांग घिसटते-घिसटते सेंटर जाऊंगा तो लोगों की आँखें खुलेंगी, सेवा ही होगी। फिर उन्होंने कहा कि अगर कल वहाँ गया, तो घर से निकाल देंगे, सोचेंगे कि हमारा एक बेटा मर गया।

अगले दिन फिर मेरी वही दिनचर्या...। सुबह जल्दी उठना, स्नान कर आश्रम जाना। मेरे पिताजी, जिन्होंने मुझे गोद लिया था... वे बोले, कल इतनी बात हो गई, फिर भी तू जा रहा है! अगर तू गया तो हम तुझे घर से निकाल देंगे। मैंने कहा, मुरली तो सुनने दो। बाद में मेरे जन्म देने वाले पिता को ये बात पता चली। तो उन्होंने पूरी ताकत और जोश में आकर एक हाथ से मेरे बाल पकड़े और दूसरे हाथ में चप्पल उठाया और मुझे गीता पाठशाला तक ले गये। वहाँ के निमित्त को कहा, इसको क्या सिखाया है जो ये हमारी बात मानता ही नहीं। मैंने कहा इसमें इनका कोई दोष नहीं है, जो कहना है मुझे कहो। दूसरी तरफ से बड़े भाई और सब आये। बड़े भाई ने मेरा गला पकड़ लिया और खींचकर सड़क पर ले गया। वहाँ चूल्हा जलाने की लकड़ी सूख रही थी। उसने वो लकड़ी उठाकर मुझे मारा, लेकिन इसका ना मेरे मन पर और ना ही शरीर पर कोई असर पड़ा। मुझे मारकर भाई खुद रो पड़ा। लोगों ने आकर छुड़ाया और कहा कि क्या ये सब ठीक है जो तुमलोग कर रहे हो? क्या ये अच्छा लगता है? लेकिन ड्रामानुसार तो ये ठीक ही था। मेरी लगन इतनी थी कि थोड़े दिन बाद फिर मुरली में जाना शुरू कर दिया।

जन्म दिया है तो शरीर को काट सकते हैं, भाग्य को नहीं

मुझे सबने सताने की, डराने की बहुत कोशिश की, परंतु संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं जो मेरी लगन को कम कर सके। मेरी लगन को देखते हुए मुझे गोद लिए हुए मेरे धर्म पिता ने सोचा कि ये तो शादी नहीं करेगा, तो मेरे वंश की वृद्धि भी नहीं होगी, तो इसे रखने से मुझे क्या फायदा! उन्होंने कहा, मैं तुम्हें तुम्हारे पिता को लौटा दूंगा। मैंने बहुत समझाया पर वे माने नहीं। फिर वे मुझे लेकर मेरे पिता के पास पहुँचे। मैंने दोनों पिताओं से कहा, आपने गीता सुनी है, उसमें लिखा है कि जब भगवान मुरली सुना रहे थे, तो गोप-गोपियों को सुनाई दे रहा था, लेकिन माता-पिता को नहीं। वो मुरली जो मुझे सुनाई दे रही है, आपको नहीं। आपने मुझे जन्म दिया है, इसलिए शरीर पर आपका अधिकार है। आप मेरे शरीर को काट सकते हैं, मार सकते हैं, लेकिन मेरे भाग्य को नहीं। ऐसा कहकर मैं थोड़ा गम्भीर होकर बैठ गया। तो मेरे जन्मदाता पिता बोले, देख बेटा... तू प्रहलाद है और मैंने हिरण्य कश्यप की तरह तेरी परीक्षा ली। तू पास हो गया। आज से तुझपर कोई बंधन नहीं लगाये जायेंगे। अगर तू मधुबन रहना चाहे तो भी तुझे इसकी इज़ाज़त है। पाँच वर्ष तक जिन्होंने मुझे भगवान से मिलने नहीं जाने दिया उनके मुख से ये बात सुनकर बहुत खुशी हुई। मैंने सोचा, धन्य हैं वो माता पिता जिन्होंने मेरे जैसे पुत्र को जन्म दिया जो मैं प्रभु के काम आ सका। उसके बाद उन्होंने मुझे शहर भेज दिया। वहाँ सेंटर की बहन जी ने मेरी ईश्वरीय लगन देख मुझे मधुबन भेज दिया और तब से मैं बन्धन मुक्त हो गया।

अभी मेरे घर में गीता पाठशाला है। मेरे भाई, पिताजी मधुबन शिविर करने आये। मेरे घर और आस-पड़ोस के लगभग पच्चीस लोगों ने अपने जीवन को इस ज्ञान से खुशबूदार बनाया है और सभी मिलकर इश्वरीय सेवा कर रहे हैं। अभी मैं दिल्ली के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में सेवारत हूँ। आज मुझे अनुभव होता है कि वो विघ्न भी धन्य था जिसने मुझे इस लायक बनाया।

मैं सभी को कहना चाहता हूँ कि जिनेके पास विघ्न आते हैं वह बहुत-बहुत सौभाग्यशाली हैं। अब मेरा यही पुरुषार्थ है कि मैं ईश्वरीय शिक्षा के चारो ही सब्जेक्ट ज्ञान योग धारणा सेवा सभी में एक्यूरेट बनूँ। कोई पूछे कि ओ.आर.सी. में नम्बरवन स्टूडेंट कौन, तो सभी कहें... सचिन। यही मेरा लक्ष्य है।